जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जबतक स्वयं परखने की दृष्टि न हो, उधार की बुद्धि से कुछ लाभ नहीं होता।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ : 10

वर्ष : 29, अंक : 6 | सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (द्वितीय), 2006 | प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

बाल संस्कार शिविरों के साथ मनाया श्रुत पंचमी महोत्सव

1. खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर में जैन युवा शास्त्री परिषद्, खड़ैरी के तत्त्वावधान में दिनांक 28 मई से 4 जून,06 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. यशपालजी जैन के मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त प्रतिदिन जिनधर्म प्रवेशिका की विशेष कक्षा ली गई। आपके अतिरिक्त पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा बालकों की विशेष कक्षा एवं पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद द्वारा छहढाला की कक्षा ली गई।

आयोजन में पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली, पण्डित आशीषजी टीकमगढ़, पण्डित निकलंकजी शास्त्री कोटा, पण्डित निखिलजी शास्त्री बण्डा, पण्डित अंकुरजी शास्त्री दहेगाँव एवं पण्डित विवेकजी दलपतपुर द्वारा अध्यापन कार्य कराया गया। शिविर में लगभग 300 बच्चों ने भाग लिया।

इस अवसर पर पण्डित गोविन्ददासजी, पण्डित ताराचन्दजी, पण्डित हुकमचन्दजी, पण्डित नरोत्तमदासजी एवं 15 स्थानीय शास्त्री विद्वानों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

समापन समारोह में विधायक सोनाबाई एवं जिला भाजपा अध्यक्ष राजेन्द्र सिंघई उपस्थित थे।

2. विदिशा (म.प्र.) : यहाँ श्री शीतलनाथ दि. जैन मंदिर, अन्दर-किला में दिनांक 28 मई से 1 जून,06 तक श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान एवं स्व. श्री सिंघई गुलाबचन्दजी बडकुल की स्मृति में णमोकार महामण्डल विधान व आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा एवं ब्र. अमित भैयाजी एवं स्थानीय विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

इस अवसर पर विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य स्थानीय विद्वानों के सहयोग से पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर ने सम्पन्न कराये।

श्रुत पंचमी के अवसर पर विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी जिनवाणी शोभायात्रा सहित अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

3. खतौली (उ.प्र.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर पीसनोपाडा में श्रुत पंचमी के अवसर पर दिनांक 29 मई से 5 जून,06 तक बाल संस्कार शिविर एवं नवलब्धि विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: 108 मुनि श्री सम्यक्त्व भूषणजी महाराज के मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी के सारगर्भित विशेष प्रवचनों से समाज लाभान्वित हुआ।

प्रतिदिन तीन समय विशेष बाल कक्षाओं का आयोजन किया गया, जिसके माध्यम से लगभग 125 बालक-बालिकायें लाभान्वित हुये।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित सोनू शास्त्री फिरोजाबाद ने सम्पन्न कराये।

श्रुत पंचमी के दिन विशाल जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई। प्रतिदिन रात्रि में वीतराग-विज्ञान पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

4. हिंगोली (महा.) : यहाँ महावीर भवन में दिनांक 27 मई से 2 जून, 06 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विभिन्न विद्वानों के सहयोग से 7 कक्षाओं के माध्यम से लगभग 250 बच्चों को संस्कारित किया गया।

प्रतिदिन प्रात: एवं सायं पण्डित अशोकजी मांगुलकर के समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा दोपहर में पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री रायपुर द्वारा पंच परावर्तन विषय पर विशेष कक्षा ली गई।

बाल कक्षाओं में पण्डित सचिनजी पाटनी कन्नड, पण्डित विवेकजी सातपुते, पण्डित शाकुलजी शास्त्री मेरठ, पण्डित राहुलजी अलवर, पण्डित आशीषजी रोकड़े, पण्डित एलमचन्दजी, पण्डित प्रजयजी आदि विद्वानों का सहयोग मिला।

रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। शिविर का संचालन पण्डित अमोलजी सिंघई ने किया। **ह्न शशिकान्त दोडल**

5. दिल्ली : यहाँ न्यू उस्मानपुरा में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 14 मई से 21 मई, 2006 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में दिल्ली के विभिन्न उपनगरों से आये लगभग 400 बच्चों को पण्डित राकेशजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित मनोजजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेरा, पण्डित निकलंकजी शास्त्री कोटा आदि विद्वानों द्वारा 7 कक्षाओं के माध्यम से संस्कारित किया गया। **(शेष पृष्ठ 4 पर ....)**

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

५. तथ्य एवं सत्य को समस्या मत बनने दो

लाभानन्द बहुत समय से मानव समाज के इस मनोवैज्ञानिक तथ्य एवं सार्वजनिक सत्य को अनुभव कर रहा था कि ह्न ''सभी मानव मानसिक सुख-शान्ति से अपना वर्तमान जीवन-यापन करना चाहते हैं। परलोक में अच्छी गति प्राप्त हो, इसके लिए भी कुछ करना चाहते हैं। पारिवारिक सुख के लिए परस्पर प्रेम से भी रहना चाहते हैं। इसके अलावा आर्थिक अभाव में भी कोई व्यक्ति सुख से जीवन-यापन नहीं कर सकता; क्योंकि भौतिक सुख-सुविधायें भी तो सबको चाहिए ही न ! इसके लिए जो उपाय संभव होते हैं, व्यक्ति अपनी शक्ति के अनुसार उन्हें करने को सदैव तत्पर रहते हैं; परन्तु यह सब कैसे होगा ? इसका सही उपाय क्या है ? इनमें सफलता प्राप्त करने का राज क्या है ? यह अधिकांश व्यक्ति नहीं जानते। इसकारण जो भी आधे/अधूरे उपाय करते हैं, उनसे पूरी तरह सफलता नहीं मिलती। ऐसी स्थिति में व्यक्ति सुख-शान्ति से जीवन-यापन कैसे कर सकते हैं ? अत: इस दिशा में कुछ ऐसा प्रयत्न करना चाहिए ताकि व्यक्ति कोई सही उपाय जान सके।''

यह सोचते-विचारते उसे एक उपाय सूझा कि ह्न क्यों न इस विषय पर एक ऐसा सेमीनार आयोजित किया जाय, जिसमें इस दिशा में सफल व्यक्तियों के विचार सुनने को मिलें ? उन्हीं विचारों में से कोई ऐसा मार्ग मिल जायेगा, जो हमें हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने में, हमारे सपने पूरे करने में सहायक हो सकेगा। बस, फिर क्या था लाभानन्द ने एक ऐसे सेमीनार करने की रूपरेखा तैयार की, जिसमें व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक एवं पारिवारिक उत्थान की खुलकर चर्चा हो। सेमीनार का विषय रखा ह्न '**लोक व्यवहार में कुशलता, व्यापार में सफलता और परलोक में सद्गति प्राप्त करने की कला।**'

विषय आकर्षक था और इस सेमीनार के प्रमुख वक्ता लोकप्रिय वक्ता ज्ञानेशजी थे, इस कारण विशाल सेमीनार स्थल समय के पहले ही खचाखच भर गया।

मंगलाचरणोपरान्त सेमीनार के संचालक लाभानन्द ने हजारों हाथों की तालियों की गड़गड़ाहट के साथ प्रमुख वक्ता का माल्यार्पण से स्वागत करते हुए कहा ह्न ''आज हम सब ज्ञानेशजी को अपने बीच पाकर गौरवान्वित हैं। आप लोगों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि धार्मिक क्षेत्र के शिखर पुरुष श्री ज्ञानेशजी का आध्यात्मिक अध्ययन और अहिंसक आचरण तो अनुकरणीय है ही, उनका दुनियादारी को देखने का नजरिया भी आदर्श है, हम सबके लिए सन्मार्ग दर्शक है।''

इसप्रकार विशाल जनसमूह को ज्ञानेशजी का संक्षिप्त परिचय कराते हुए उन्हें भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया।

ज्ञानेशजी ने तालियों की गूंज से किए गये अपने विशेष स्वागत के प्रत्युत्तर में धन्यवाद देते हुए एवं सबके कल्याण की कामना करते हुए अपना भाषण प्रारंभ किया ह्न ''मित्रो ! मैं आपको कुछ ऐसे वास्तविक तथ्य और प्रयोग्य सिद्ध सत्य बताना चाहता हूँ, जिन्हें अपनाकर मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सतत सफलता की ओर अग्रसर हूँ, सन्तुष्ट हूँ, सुख शान्ति का अनुभव करता हूँ।

मैं अपने इस उपलब्ध सुख और सफलता को आप सब में बाँट देना चाहता हूँ। आप सोचते होंगे कि ह्न 'ज्ञानेशजी तो कोई अलौकिक, चमत्कारिक या सिद्ध पुरुष हैं, उन्हें तो कोई गॉडगिफ्ट है, जिसके कारण उन्होंने एक साधारण से परिवार में जन्म लेकर और साधारण स्नातक (सिम्पल ग्रेजुएट) होकर भी अपने जीवन का ऐसा चतुर्मुखी विकास कर लिया है। हम जैसे साधारण व्यक्ति के द्वारा यह सब संभव नहीं है। यह तो ज्ञानेशजी जैसा व्यक्ति ही कर सकता है, हम तो सामान्य जन हैं, साधारण प्राणी हैं, यह सब हमसे नहीं हो सकता।' परन्तु आप का यह सोचना सही नहीं है। मुझमें ऐसा कुछ भी नहीं है। मैं भी आप लोगों जैसा ही बहुत ही साधारण व्यक्ति हूँ। यदि मुझे कुछ सुख-शान्ति और संतुष्टि मिली है तो उसके पीछे कुछ सामान्य से सिद्धान्त हैं, साधारण-सी सरल बातें हैं, जिन्हें कोई भी अपना सकता है और अपने जीवन की रिक्तता को सुख-शान्ति से भर सकता है। यदि यही गॉडगिफ्ट है तो यह आप सबको भी उपलब्ध है।

सुख-दु:ख दोनों दो तरह के होते हैं ह्न एक मानसिक, दूसरा शारीरिक। समस्या शारीरिक दु:ख की नहीं है, यह तो शुद्ध सात्विक खान-पान, थोड़ा-सा श्रम और नियमित दिनचर्या से दूर किया जा सकता है। शारीरिक सुख-दु:ख में हमारे पूर्वकृत पुण्य-पाप का भी योगदान होता है। जिसने पूर्व में जो भले-बुरे कर्म किए हैं, उन कर्मों का फल तो भुगतना ही पड़ेगा।

सबसे बड़ी समस्या तो मानसिक सुख-दु:ख की है। इसके लिए सर्वप्रथम तो हमें अध्यात्म की शरण में आना आवश्यक है, अत: 'धम्मं शरणं गच्छामि' का संकल्प लेना होगा।

यहाँ 'धर्म' से मेरा तात्पर्य आपको किसी क्रियाकाण्ड में उलझाने से नहीं है। कोरा क्रियाकाण्ड धर्म की परिभाषा में आता भी नहीं है। मैं तो आपको यह बताना चाहता हूँ कि जिसप्रकार आग का धर्म उष्णता है, पानी का धर्म शीतलता है, उसीप्रकार जीव-आत्मा का धर्म क्षमा है, समता, शान्ति, सरलता, सत्य एवं दया आदि है और राग-द्वेष, घृणा, छल-कपट, हिंसा, झूठ, चोरी, क्रूरता आदि अधर्म है, पाप है। धर्म प्राप्त करने एवं अधर्म त्यागने के कुछ सिद्धान्त हैं, कुछ फार्मूले हैं, उन्हें अपनाना होगा। उन्हीं में से आज कुछ चुनिन्दा तथ्यों की चर्चा आपसे हम इस सेमीनार में करना चाहते हैं।

एक संत अपने शिष्यों को समझा रहे थे कि ह्न ''दुनिया में कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं होता; यदि कोई पूर्ण होता तो फिर वह मानव नहीं देवता होता, जीवात्मा नहीं परमात्मा होता। परमात्मा के सिवाय इस जगत में कोई पूर्ण नहीं है, कोई भी निर्दोष नहीं है। यदि हम मानवों की कमियों को या दोषों को ही देखते रहेंगे तो कभी सुखी नहीं हो सकते; क्योंकि परिवार में और कर्मचारियों में कोई न कोई कमी तो होती ही है। **अत: हमारे परिजन-पुरजन वर्तमान में जैसे हैं, उनको वैसा न समझें, बारम्बार वैसा ही**

अनुभव न करें, बल्कि हम दूसरों को जैसा बनाना चाहते हैं, वैसा ही जानें, वैसा ही मानें, और वैसा ही कहें।

तात्पर्य यह है कि हम अपने और उनके मस्तिष्क में ऐसा प्रोग्रामिंग करें जैसा हम उसे बनाना चाहते हैं। हमारे पुराण इसके साक्षी हैं। पुराणों में लिखा है ह्न **''मानव को प्रतिदिन प्रातः-शाम एकान्त में बैठकर मन में ऐसा चिन्तन करना चाहिए, वाणी से ऐसा ही बोलना चाहिए कि ह्न शुद्धोऽहं, बुद्धोऽहं, निरंजनोऽहं, निर्विकारोऽहं अर्थात् मैं शुद्ध हूँ, बुद्ध हूँ, काम-क्रोध एवं राग-द्वेष विकारों से रहित निर्विकार हूँ।''**

यहाँ प्रश्न हो सकता है कि ह्न यद्यपि वर्तमान में हममें राग-द्वेष हैं, कषायों की कलुषता है, हम शुद्ध नहीं हैं, बुद्ध अर्थात् ज्ञानी भी नहीं हैं, निर्विकार भी नहीं हैं, फिर हमें ये मंत्र बोलने को क्यों कहा गया है ?

''हम जैसे हैं, वैसा न सोचें और न वैसा ही बोलें, बल्कि हम जो बनना चाहते हैं, जैसा बनना चाहते हैं वही सोचें, वही बोलें। ऐसा सोचने से एक दिन हम वैसे ही बन जायेंगे। दूसरों को भी वही कहें, जैसा आप उन्हें बनाना चाहते हैं; क्योंकि यही बात दूसरों पर भी लागू होती है। अतः हम अपने पुत्र, पुत्री, पत्नी आदि पूरे परिवार को एवं दुनिया को भी जैसा देखना चाहते हैं, उन्हें जैसा बनाना चाहते हैं, उनके बारे में वही सोचें, वही बोलें। वे भी एक दिन तुम्हारे सोचे और बोले अनुसार बन जायेंगे। अतः उनके विषय में भी निगेटिव कभी न बोले। यही बात उपर्युक्त मंत्रों में प्रोग्रामिंग की गई है।

हमारा यह चिन्तन चिन्तामणि रत्न है, हमारी यह बोली मनोवांछित फल देने वाली कामधेनु है। यह न केवल धार्मिक श्रद्धा का विषय है, बल्कि यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य भी है।

उदाहरणार्थ ह्न मान लो कि ह्न हमारे बेटा, बेटी आदि क्रोधी हैं, जिद्दी हैं, पढ़ते नहीं हैं, समय पर सोकर नहीं उठते, झूठ बोलते हैं। आप उनकी इन आदतों से परेशान हैं, दुःखी हैं और उन्हें सुधारना चाहते हैं; इसके लिए यदि हम उसे वर्तमान सत्य के आधार पर मूर्ख, जिद्दी, हठी, नालायक, क्रोधी आदि कहकर डाँटते हैं, पीटते हैं, दूसरों के सामने भी यही सब कहकर उसे अपमानित करते हैं, शिक्षकों से शिकायत करते हैं, नतीजा यह होता है कि बालक-बालिकायें सुधरने के बजाय बिगड़ते जाते हैं, विद्रोही हो जाते हैं, बेशर्म हो जाते हैं ह्न ऐसा हम प्रत्यक्ष देखते हैं और हम इसकारण तनाव में रहने लगते हैं, हमें आकुलता और अशान्ति होती है, हम दुःखी हो जाते हैं।

वस्तुतः हमें वर्तमान तथ्य को न कहना चाहिए और न मन में सोचना ही चाहिए; क्योंकि ह्न हम जो सोचते हैं, जो कहते हैं, वही हमारे अवचेतन मन में अर्थात् अर्द्ध जाग्रत मन में अंकित हो जाता है। जो अवचेतन मन में अंकित होता है, वह वहाँ से चेतन मन में अर्थात् जाग्रत मन में आ जाता है; जो चेतन मन में आता है, वही वाणी में व्यक्त होता है; पुनः वाणी से अवचेतन मन में, वहाँ से चेतन में; चेतन मन से फिर वाणी में। इसप्रकार, इस दुःखद दुष्चक्र का सिलसिला एकबार प्रारंभ हुआ तो लम्बे काल तक चलता ही रहता है। यह मनोविज्ञान का सिद्धान्त है, अतः हम जैसा नहीं चाहते, वैसा कभी न बोलें, कभी न सोचें।

हमारे शरीर में दो मन होते हैं एक चेतन मन, दूसरा अवचेतन मन। सर्वप्रथम हम जो सुनते हैं, बोलते हैं या सोचते हैं, वह पहले हमारे अवचेतन (सबकान्सस माइन्ड) में फीड होता है। फिर वह बात चेतन मन के माध्यम से वाणी में आती है। इसे हम कम्प्यूटर के उदाहरण से समझ सकते हैं।

जवान (जीभ) शरीर रूपी कम्प्यूटर का 'की-बोर्ड' है, जिसतरह 'की-बोर्ड' पर उंगलियाँ चलाने से मेटर रेम में, फिर सेव करने पर हार्डडिस्क में फीड होता है, फिर स्क्रीन पर आता है। इसी प्रकार जो बोलते हैं, वही लघु मस्तिष्क में अंकित होता है, वहाँ से वही बड़े मस्तिष्क में आता है और जो मन में होता है, वही वाणी में आता है।

यदि शराब कारखाने में बन गई तो बाजार में आयेगी ही, बाजार में आई शराब पेट में भी जायेगी ही, पेट में गई तो माथे में भन्नायेगी ही, अतः यदि आप चाहते हैं कि वह माथे में न भन्नाये तो कारखाने के उत्पादन पर ही रोक लगानी होगी।

बस, इसीलिए तो कहते हैं कि हम जैसा दूसरों को देखना पसंद नहीं करते, वैसा उसे कभी न बोलें, आप जैसा जिसे देखना चाहते हैं, वैसा ही बोलें, तभी जीवन में सुख-शान्ति होगी।

दूसरी बात ह्न हमें अपना दृष्टिकोण, अपनी सोच सदैव सकारात्मक रखनी होगी। एक ही घटना को, एक ही तथ्य को भिन्न -भिन्न व्यक्तियों द्वारा देखने का दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न हो सकता है, यह उन व्यक्तियों के सोच पर निर्भर करता है कि वे उसे किस दृष्टिकोण से देखते हैं।

एक साधु अपने दो शिष्यों ह्न परशुराम और राम के साथ वन की ओर जा रहा था। रास्ते में आम का पेड़ था। एक पथिक ने पत्थर फैंककर एक ही चोट में आम का फल नीचे गिरा दिया और साधु को आता देख भाग गया।

फल को हाथ में लेकर साधु ने राम से पूछा ह्न इस आम्र वृक्ष से नीचे गिरे फल से तुमने क्या शिक्षा ग्रहण की ?

राम ने उत्तर दिया ह्न गुरुदेव ! उस पथिक ने वृक्ष पर पत्थर फैंक कर वृक्ष को घायल कर दिया, फिर भी इस वृक्ष ने उसके बदले में यह मीठा फल दिया। कितना परोपकारी और महान है यह वृक्ष ! चोट खाकर भी फल देता है।

यही प्रश्न साधु ने परशुराम से किया।

परशुराम ने कहा ह्न गुरुजी ! 'लातों के देव बातों से नहीं मानते' पत्थर से चोट खाये बिना यह आम का वृक्ष भी फल देनेवाला नहीं था। आप इसे कितना भी उपेदश देकर देख लो, फिर भी यह चोट खाये बिना फल नहीं देगा।

इसप्रकार एक ही घटना से सज्जन और दुर्जन अपने-अपने सोच के अनुसार अलग-अलग शिक्षा ग्रहण करते हैं।

इस उदाहरण में राम कृतज्ञ है और परशुराम कृतघ्न हैं। परशुराम जैसे सोच वाले व्यक्ति कभी मानसिक सुख-शान्ति नहीं पा सकते; क्योंकि उसका व्यवहार नकारात्मक है, गलत है।

चन्द्रगुप्त और चाणक्य रास्तें में जा रहे थे। ज्यों ही वे तालाब के तट पर पहुँचे कि चाणक्य को घोड़ों की टापों की आवाज सुनाई दी, मुड़कर पीछे देखा तो धूल उड़ती दिखाई दी। चाणक्य को समझने में देर नहीं लगी; उसने चन्द्रगुप्त से कहा ह्न ''तुम शीघ्र ही तालाब में डुबकी लगाकर कर छिप जाओ। चन्द्रगुप्त कुछ सोचने लगा, क्या ? क्यों ? करने लगा; पर उसके क्या ? क्यों ? का उत्तर देने का समय नहीं था, अतः चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को

धक्का देकर पानी में गिरा दिया। बस, इतनी ही देर में चार घुड़सवार सैनिक सामने आकर रुके और बूढ़े बाबा से पूछा ! क्यों बाबा ! आपको यहाँ चाणक्य और चन्द्रगुप्त जाते दिखे।'' बाबा ने कहा ह्न ''चाणक्य को तो मैं नहीं जानता, मैंने उसे कभी देखा भी नहीं; पर आपको देखकर राजकुमार के वेश में एक लड़का इस तालाब में अभी-अभी छिप गया है।''

वे चारों सैनिक उतावलेपन में वैसे ही कपड़े पहने हथियारों सहित पानी में जाने लगे तो बाबा ने कहा ह्न ''अरे ! भाई, कपड़े तो खोल दो, हथियार भी रख दो और तसल्ली से लड़के को खोज कर पकड़ लाओ, तुम्हारे सामान की रखवाली करने को मैं खड़ा हूँ, चिन्ता क्यों करते हो ?''

सैनिकों ने सोचा ह्न ''बाबा ठीक कहता है, कपड़े गीले क्यों करें, हथियार भी खराब हो जायेंगे।''

कपड़े एवं हथियार किनारे पर रख कर ज्यों ही सैनिकों ने पानी में प्रवेश किया, त्यों ही बूढ़े बाबा चाणक्य ने उन्हीं के हथियारों से चारों को मार गिराया और चन्द्रगुप्त को पानी से बाहर निकाल कर पूछा ह्न ''जब मैंने धक्का देकर तुम्हें पानी में गिराया तब तुमने मेरे बारे में क्या सोचा ? और जब मैंने सैनिकों को यह बताया कि ह्न एक बालक राजकुमार की पोषाक पहने तुम्हें देखकर पानी में छिप गया है, तब तुम मेरे बारे में क्या सोच रहे थे ?''

चन्द्रगुप्त का एक ही उत्तर था ह्न ''मैं सोच रहा था कि गुरुजी जो कुछ/जैसा भी व्यवहार मेरे साथ कर रहे हैं और मेरे बारे में कह रहे हैं, उसमें कहीं न कहीं मेरा ही हित छिपा होगा। पितृतुल्य मेरे गुरुजी मेरे साथ धोखा-धड़ी कर ही नहीं सकते।''

इस कहानी से हमें दो बातें सीखने को मिलतीं हैं, एक तो चन्द्रगुप्त की तरह हम भी सकारात्मक सोचें और दूसरे अपने गुरुओं के प्रति ऐसी श्रद्धा हो ह्न तभी हम उनसे सन्मार्ग की शिक्षा ग्रहण कर सुख-शान्ति से रह सकेंगे।

गुलाब के पेड़ में फूल भी होते हैं, काँटें भी होते हैं, सज्जन फूल को ही देखते हैं और दुर्जन काँटे को, जिन्हें फूल दिखते हैं उनकी बगिया सुगन्धित वातावरण से महकती है, जिन्हें काँटे दिखते हैं, वे उन्हें उखाड़कर फैंक देते हैं। वे धतूरा बोते हैं, जिसमें फूल ही फूल होते हैं, काँटें नहीं; पर उन फूलों में सुगंध नहीं, बल्कि जहर होता है।

तीसरी बात ह्न कभी किसी काम को सशर्त मत करो, किसी की आलोचना मत करो और किसी से कोई शिकायत मत करो।

किसी से यह मत कहो कि आपने हमारा काम नहीं किया, बुरे दिनों में सहयोग नहीं किया। लौकिक दृष्टि से सुखी रहने के लिए भी इन्हें महामंत्र की तरह याद रखो ! क्योंकि निन्दा, आलोचना और शिकायत करने से अपना मन ही आन्दोलित होता है, उत्तेजित होता, जिससे हमें पाप का बन्ध तो होता ही है, हम जिससे किसी की निन्दा, आलोचना करते हैं, शिकायत करते हैं, सुननेवाला उसके बारे में नहीं; बल्कि हमारे बारे में ही गलत धारणा बनाता है। वह सोचता है कि 'इस व्यक्ति को दूसरों की निन्दा, टीका-टिप्पणी करने के सिवाय और शिकायतें करने के सिवाय अन्य कुछ काम ही नहीं है। कभी किसी की तो कभी किसी की निन्दा एवं आलोचना ही करता रहता है।'

चौथी बात ह्न यदि हम सचमुच सुख-शान्ति से रहना चाहते हैं तो तथ्यों को तथ्य के रूप में ही देखें और उसका समाधान खोजें। तथ्यों को समस्या न बनाये। समस्या बनते ही मूल तथ्य तो गायब ही हो जाता है और हम समस्या के जाल में बुरी तरह उलझ जाते हैं। उदाहरणार्थ ह्न कल्पना करो ह्न दो-ढाई वर्ष का बालक घुटनों के बल चलते-चलते बालकनी (छज्जे) पर आकर नीचे गिर गया।

अब मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, जानना चाहता हूँ कि बालक के गिरने की आकस्मिक दुर्घटना एक तथ्य है, आँखों देखा सत्य है या समस्या है ?

आपका उत्तर होगा ह्न नि:सन्देह दुर्घटना एक तथ्य है, आँखों देखा सत्य है, यह कोई समस्या नहीं है। जो घट गया वह सत्य है बाकी सब कहानी है। ऐसी स्थिति में अगला कदम होगा ह्न तत्काल हॉस्पिटल ले जाकर इमरजेन्सी में उपचार कराना होगा।

इसके विपरीत इस घटित घटना को तथ्य को यदि किसी के द्वारा उत्पन्न की हुई समस्या समझ लिया गया तो उसके कारणों की खोज में उलझ जायेगा। आधे-अधूरे संभावित कारणों का पता लगते ही आरोप-प्रत्यारोपों द्वारा एक-दूसरे पर दोषारोपण प्रारंभ हो जायेंगे। यह बालक गिरा तो गिरा कैसे ? किसी ने ध्यान क्यों नहीं दिया ? सबके सब क्या कर रहे थे ? इतने लोग एक बच्चे को नहीं संभाल सकते? नतीजा होगा अशान्ति, दु:ख और कलह।

बच्चे के प्रति सहानुभूति, उसकी संभाल, उसका समय पर डॉक्टरी सहायता आदि तो एक ओर रह जायेगे; सब मुँह लटका कर बैठ जाँयेगे, उलझ गया पूरा परिवार उस समस्या में।

अत: यदि सुख-शान्ति से जीवन जीना है तो **सत्य तथ्य को कभी भी समस्या मत बनने दो।** अभी इतना ही, शेष फिर कभी। ●

(पृष्ठ 1 का शेष ....)

प्रात: पण्डित राकेशजी शास्त्री ने प्रौढ़ वर्ग के लिये छहढाला की कक्षा ली। प्रतिदिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

अन्तिम दिन परीक्षा एवं पुरस्कार वितरण किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री पृथ्वीचन्दजी जैन ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्र.अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना एवं श्री आदीशजी जैन मंचासीन थे।

कार्यक्रम पण्डित ऋषभजी शास्त्री के निर्देशन में संजीवजी, राजीवजी, मुकेशजी, श्रीमती देशनाजी, श्रीमती नूतनजी के सहयोग से सम्पन्न हुये।

धर्म प्रभावना

बैंगलौर (कर्ना.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन एवं मुमुक्षु मण्डल के सहयोग से दिनांक 3 मई से 25 मई, 2006 तक पण्डित ऋषभकुमारजी इन्दौर के मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचन हुये।

उच्च शिक्षा हेतु छात्र-वृत्तियाँ

कई जैन संस्थायें एवं संगठन जैन छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु छात्र-वृत्तियाँ प्रदान करती हैं। छात्र-वृत्तियाँ देनेवाली ऐसी संस्थाओं की एक विस्तृत सूची जैन छात्रों के लिये नि:शुल्क उपलब्ध है। सूची प्राप्त करने के लिये कृपया निम्न लिखित पते पर अपना नाम, पता लिखा हुआ जवाबी लिफाफा भेज दें ह्न जैन फ्रेण्डस, पोस्ट बॉक्स 58, चिंचवड पूर्व, पुणे-411019 ●

विदेश कार्यक्रम

1. पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली विगत तीन वर्षों से धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। इस वर्ष दिनांक 23 जून से 11 अगस्त, 2006 तक उनका नगरवार विदेश कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

23 जून से 29 जून **डलास**, 30 जून से 3 जुलाई **हर्टफोर्ड**, 4 जुलाई से 8 जुलाई **ओरलैण्डो**, 9 जुलाई से 16 जुलाई **मियामी**, 17 जुलाई से 24 जुलाई **चारलोएट**, 25 जुलाई से 2 अगस्त **शिकागो**, 3 अगस्त से 11 अगस्त **लन्दन**।

2. पण्डित दिनेशभाई एवं डॉ. उज्ज्वला शहा, मुम्बई दिनांक 3 अगस्त से 16 अक्टूबर, 2006 तक धर्म प्रचारार्थ अमेरिका एवं इंग्लैण्ड के विविध नगरों में जा रहे हैं। उनका नगरवार कार्यक्रम इसप्रकार है ह्न

3 अगस्त से 11 अगस्त **लंदन**, 11 अगस्त से 17 अगस्त **पिट्सबर्ग**, 17 अगस्त से 21 अगस्त **कनाडा**, 21 अगस्त से 28 अगस्त **मियामी**, 28 अगस्त से 9 सितम्बर (दसलक्षण पर्व में) **वाशिंगटन डी.सी.**, 9 सितम्बर से 18 सितम्बर **रालै**, 18 सितम्बर से 25 सितम्बर **अटलाण्टा**, 25 सितम्बर से 2 अक्टूबर **शिकागो**, 2 अक्टूबर से 7 अक्टूबर **डलास**, 8 अक्टूबर और 9 अक्टूबर **वेको**, 10 अक्टूबर से 16 अक्टूबर **डलास**।

जिन भारतवासी बन्धुओं के सम्बन्धी उक्त स्थानों में से कहीं रहते हों, वे उन्हें सूचित करें, ताकि वे धर्मलाभ ले सकें।

ज्ञातव्य है कि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल विगत 25 मई से धर्म प्रचारार्थ विदेश यात्रा पर हैं, जिसका विस्तृत कार्यक्रम अप्रैल (प्रथम) अंक में प्रकाशित किया जा चुका है।

दसलक्षण हेतु आमंत्रण भेजें

दसलक्षण पर्व में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रवचनकार विद्वान बुलाने हेतु आमंत्रण-पत्र शीघ्र भेजें; ताकि तदनुसार निर्णय करके निर्धारित स्थानों की सूचि शीघ्र प्रकाशित की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता पिनकोड सहित तथा फोन नं. एस.टी.डी कोड सहित लिखें।

स्वाध्याय मंदिर का उद्घाटन

आगरा (उ.प्र.) : गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जन्म जयन्ती के पावन अवसर पर दिनांक 29 अप्रैल को एफ-837/2, तेजनगर, कमला नगर आगरा में नवनिर्मित परम पूज्य श्री वीर सीमंधर गौतम कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मंदिर का उद्घाटन श्री पदमचन्दजी सर्राफ के करकमलों से किया गया। आत्मार्थीजन यहाँ रहकर नि:शुल्क आवास व भोजन सहित स्वयं के आत्मकल्याण हेतु सत्शास्त्रों का स्वाध्याय आदि करके धर्मलाभ प्राप्त कर सकते हैं। **सम्पर्क सूत्र :** 94123 30893, 92197 07267

अवश्य लाभ लें

रात्रि 10.20 पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों को देखना न भूलें। प्रवचन प्रसारण में कोई समस्या हो तो श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री से 09414717829 पर सम्पर्क करें।

सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका जीवकाण्ड हिन्दी में

आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित गोम्मटसार की पण्डित टोडरमलजी द्वारा लिखित ढूंढारी भाषा में रचित सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका टीका का हिन्दी अनुवाद डॉ. उज्ज्वला शहा ने किया है। यह मात्र अनुवाद ही नहीं है अपितु अनेक स्थानों पर गहन विषयों को समझाने हेतु विशेषार्थ भी लिखा है। अर्थ संदृष्टि अधिकार में जीवकाण्ड की कठिन गणित को चिन्हों द्वारा सरल किया है; जो अभी लुप्त सा हो गया है। उसे भी अधिक विस्तार के साथ समझाकर हिन्दी भाषा मे छापने का विचार है।

लगभग 900-1000 पृष्ठों की इस हिन्दी टीका की प्रिन्टिंग शुरु हो गई है। यह महत् कार्य कुछ महिनों में सम्पन्न हो जायेगा।

जिज्ञासु मुमुक्षुजन जो इस ग्रन्थ को प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपना आर्डर नाम, पता, टेलीफोन नं. सहित निम्न पते पर भेज दें। कोई भी व्यक्ति अभी पैसे नहीं भेजें। ग्रन्थ तैयार होने पर उन्हें पत्र द्वारा सूचित किया जायेगा।

सम्पर्क ह्न पण्डित दिनेशभाई शाह, 157/9, निर्मला निवास, सायन (पू.) मुम्बई - 400022, फोन नं. 24073581

अक्षय तृतीया सानन्द सम्पन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन सीमन्धर जिनालय देवनगर में अक्षय तृतीया के अवसर पर प्रात: जिनपूजन के उपरान्त पण्डित नितुलजी शास्त्री एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री के भगवान आदिनाथ के जीवन-व्यक्तित्व पर मार्मिक प्रवचन हुये। तत्पश्चात् सभी बच्चों को श्रीमती कुसुम जैन एवं श्रीमती पुष्पा जैन की ओर से इक्षुरस का पान कराया गया।

सायंकाल भगवान आदिनाथ के व्यक्तित्व पर प्रश्न-मंच का आयोजन किया गया। **ह्न आकाश जैन**

दान राशियाँ प्राप्त

1. श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक चि. अरुण शास्त्री बड़ामलहरा का सौ. आरती जैन घुवारा के साथ दिनांक 7 फरवरी, 2006 को विवाह सम्पन्न हुआ।

2. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के ही स्नातक मुम्बई निवासी चि. रूपेश शास्त्री का सौ.रूबल जैन के साथ दिनांक 2 जून, 2006 को विवाह हुआ।

उक्त दोनों विवाहों के उपलक्ष में **देशना कम्प्यूटर्स, जयपुर** की ओर से जैनपथप्रदर्शक समिति को 201/-रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

3. दिनांक 11 मई, 06 को जयपुर निवासी श्री रतनलालजी सेठी की सुपुत्री सौ.श्वेता (नेहा) संग चि. पीयूष सुपुत्र श्री पदमचन्दजी पाटोदी के विवाहोपलक्ष में जैनपथप्रदर्शक को 500/-रुपये प्राप्त हुये। एतदर्थ धन्यवाद !

उक्त सभी लौकिक के साथ-साथ उत्कृष्ट पारलौकिक जीवन का निर्माण करें ह्न यही मंगल कामना है।

4. श्री अशोककुमार जैन जैसवाल मेडीकल स्टोर, रत्नौद की ओर से जैनपथप्रदर्शक समिति को 201/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

5. श्री मोहनलाल पतंग्या, भीलवाड़ा की ओर से वीतराग-विज्ञान को 100/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

6. श्री श्यामराव सावळकर काटोल की ओर से 500/-रु. प्राप्त हुये।

उक्त समस्त दान दाताओं को धन्यवाद ज्ञापित करते हुये भावना भाते हैं कि भविष्य में भी आपका इसीप्रकार सहयोग मिलता रहेगा।

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 53

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

'शुद्धनय से शुद्धात्मा की ही प्राप्ति होती है' ह्न यह कथन करनेवाली अगली १९१वीं गाथा इसप्रकार है ह्न

णाहं होमि परेसिं ण मे परे संति णाणमहमेक्को।
इदि जो झायदि झाणे सो अप्पा णं हवदि झादा।।१९१।।

(हरिगीत)

पर का नहीं ना मेरे पर मैं एक ही ज्ञानातमा।
जो ध्यान में इस भाँति ध्यावे है वही शुद्धातमा।।१९१।।

'मैं पर का नहीं हूँ, पर मेरे नहीं हैं, मैं एक ज्ञान हूँ' ह्न इसप्रकार जो ध्यान करता है, वह ध्याता ध्यानकाल में आत्मा होता है।

यदि कोई यह कहे कि जो देह-धनादिक को पर मानता है तथा निज शुद्धात्मा को अपना मानकर उसका ध्यान करता है, वही शुद्धात्मा का ध्याता है ह्न ऐसा कहकर आचार्यदेव ने यहाँ रागादिक की बात नहीं की। अरे भाई ! 'देह-धनादिक के प्रति ममत्व छोड़ता है' यह कहकर ममत्व छोड़ने की बात कही है, ममत्व रखने की बात नहीं कही है।

स्त्री-पुत्र-धन तो जीव के नहीं हैं; क्योंकि ये असद्भूत हैं। स्त्री-पुत्रादि तो कभी जीव के हुए ही नहीं हैं, मिथ्यात्व की वजह से जीव उन्हें अपना मानता है। यदि मिथ्यात्व और राग छूट जाएगा, तो स्त्री-पुत्रादि अपने आप ही छूट जाएंगे। वास्तव में उनको नहीं छोड़ना है, अपितु उन्हें अपना मानना छोड़ना है तथा यह भी करना है कि जो राग अपनी पर्याय में पैदा हो रहा है, वह पैदा न हो।

'स्त्री-पुत्रादिक में एकत्व-ममत्व छोड़ना है' इससे यह भी सिद्ध होता है कि एकत्व-ममत्व भी छोड़ना है। अरे भाई ! यहाँ छोड़ने की बात तो एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्व की ही है। पर का कर्त्ता तो आत्मा कभी हुआ ही नहीं, रागादि का कर्त्ता है; इसलिए वास्तव में रागादि ही छोड़ना है, स्त्री-पुत्रादिक का छोड़ना तो औपचारिक है।

एक आदमी को किसी दूसरे आदमी से 1 लाख रुपए लेने थे; लेकिन देनेवाले की स्थिति अत्यंत खराब हो गई और वह देने में असमर्थ हो गया। लेनेवाले आदमी ने बहुत दबाव डाला; फिर भी पैसे नहीं मिले, तो उसने पंचायत बुलाई। अंत में कर्जदार आदमी उससे कहता है कि मेरे पास सिर्फ दस हजार रुपए हैं, यदि आप ये लेना चाहो तो ले लो; इससे ज्यादा पैसे मेरे पास हैं ही नहीं। पर ध्यान रखने की बात यह है कि यदि आप ये भी ले लोगे तो मेरे बाल-बच्चें भूखों मर जाएंगे। आप मान नहीं रहे हो एवं मेरी जान पे पड़ गई है, इसलिए जान छुड़ाने के लिए ये देने को तैयार हूँ।

अब यदि वह लेनेवाला आदमी यह कहता है कि मैंने तुम्हारे 90 हजार छोड़े और ये 10 हजार रुपए मुझे दे दो। फिर भी यदि वह 10 हजार रुपए ले लेता है, तब मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या वास्तव में उसने 90 हजार रुपए छोड़े हैं ? अरे भाई ! 90 हजार रुपए तो उसे किसी कीमत पर मिलनेवाले ही नहीं हैं; उन 90 हजार को छोड़ने की बात ही क्या ?

यदि वह 10 हजार रुपए छोड़ता है तो हम कह सकते हैं कि उसने 10 हजार रुपए छोड़े। यदि उस लेनेवाले को इतना भरोसा होता कि इस आदमी का कुछ सामान बेचकर 90 हजार रुपए मिल सकते हैं, तो वह ऐसा भी प्रयास करता; किन्तु उसने जब यह देख लिया कि इसके पास कुछ भी नहीं है तो वह 90 हजार रुपए छोड़ने का दम्भ भरने लगता है।

उसीप्रकार जीव स्त्री-पुत्रादिक को क्या छोड़े ? वे तो पुण्य-पाप के साथ बंधे हुए हैं। यदि पुण्य-पाप का उदय है, तो वे जीव के साथ रहेंगे और यदि पुण्य-पाप नहीं रहेंगे तो एक क्षण में ही चले जाएंगे। इसलिए स्त्री-पुत्रादिक को नहीं छोड़ना है; अपितु उनके प्रति ममत्व छोड़ना है, राग छोड़ना है।

अब यदि कोई कहे कि जैसे स्त्री-पुत्रादिक जीव के नहीं हैं; वैसे ही ममत्व भी जीव का नहीं है।

अरे भाई ! अध्यात्म के जोर में हम लोग ऐसा ही कह देते हैं; किन्तु राग और आत्मा में व मकान और आत्मा में एक-सा अंतर नहीं है। प्रवचनसार के अनुसार राग का जीव के साथ अतद्भाव नाम का अभाव है और मकान के साथ आत्मा का अत्यन्ताभाव नाम का अभाव है। हमने इन दोनों में अंतर नहीं समझा।

पर को छोड़ना और ग्रहण करना तो नाममात्र का ग्रहण करना और छोड़ना है; क्योंकि आत्मा के पर का ग्रहण और त्याग होता ही नहीं; उन्हें तो मात्र अपना मानना छोड़ना है; राग-द्वेष-मोह तो वास्तव में छोड़ना है; क्योंकि वे आत्मा में अतद्भावरूप से विद्यमान हैं। पर तो आत्मा के हैं ही नहीं; इसलिए पर को अशुद्धद्रव्य कहकर अशुद्धनय का विषय कहा तथा इसी कथन की अपेक्षा राग को शुद्धनिश्चयनय का विषय कहा।

तदनन्तर इसी संदर्भ में गाथा 191 की टीका भी द्रष्टव्य है ह्न

''जो आत्मा, मात्र अपने विषय में प्रवर्तमान अशुद्धद्रव्य निरूपणात्मक (अशुद्धद्रव्य के निरूपण स्वरूप) व्यवहारनय में अविरोधरूप से मध्यस्थ रहकर, शुद्धद्रव्य के निरूपणस्वरूप निश्चयनय के द्वारा जिसने मोह को दूर किया है ह्न ऐसा होता हुआ, ''मैं पर का नहीं हूँ, पर मेरे नहीं हैं'' इसप्रकार स्व-पर के परस्पर स्व-स्वामी सम्बन्ध को छोड़कर, 'शुद्धज्ञान ही एक मैं हूँ' इसप्रकार अनात्मा को छोड़कर, आत्मा को ही आत्मरूप से ग्रहण करके, परद्रव्य से भिन्नत्व के कारण आत्मारूप ही एक अग्र में चिन्ता को रोकता है, वह एकाग्रचिन्तानिरोधक (एक विषय में विचार को रोकनेवाला आत्मा) उस एकाग्रचिन्ता निरोध के समय वास्तव में शुद्धात्मा होता है। इससे निश्चित होता है कि शुद्धनय से ही शुद्धात्मा की प्राप्ति होती है।''

टीका में पंक्ति में जो यह लिखा है कि 'वास्तव में शुद्धात्मा होता है', तो इससे अर्थ यह निकलता है कि पहले वास्तव में शुद्धात्मा नहीं था। अरे भाई ! ऐसा नहीं है। यह 'वास्तव' शब्द संस्कृत के 'साक्षात्' शब्द का हिन्दी अनुवाद है। नयों में एक साक्षात्शुद्धनिश्चयनय है, उसका अर्थ यह है केवलज्ञानादि से सहित आत्मा को विषय बनाना। 'साक्षात्' शब्द का प्रयोग पर्याय से भी शुद्ध हो जाने के लिए होता है। वास्तव में अभी आत्मा स्वभाव से शुद्ध है और बाद में पर्याय से शुद्ध होगा। आचार्यदेव पर्याय से भी शुद्ध होने को साक्षात् शुद्ध होना कहते हैं। इससे हमें यह अर्थ नहीं निकालना चाहिए कि अभी आत्मा स्वभाव से शुद्ध है। यहाँ 'वास्तव में शुद्धात्मा होता है' का तात्पर्य मात्र इतना है कि पर्याय में भी स्वभाव की तरह शुद्धता प्रकट होती है।

अब, 'ध्रुवत्व के कारण शुद्धात्मा ही उपलब्ध करने योग्य है' ऐसा उपदेश करनेवाली गाथा 192 इसप्रकार है ह्न

एवं णाणप्पाणं दंसणभूदं अदिंदियमहत्थं ।
धुवमचलमणालंबं मण्णेऽहं अप्पगं सुद्धं ।।१९२।।

(हरिगीत)

इसतरह मैं आतमा को ज्ञानमय दर्शनमयी।
ध्रुव अचल अवलंबन रहित इन्द्रियरहित शुध मानता।।१९२।।

मैं आत्मा को इसप्रकार ज्ञानात्मक, दर्शनभूत, अतीन्द्रिय, महापदार्थ, ध्रुव, अचल, निरालम्ब और शुद्ध मानता हूँ।

गाथा में आत्मा के लिए ज्ञानात्मक, दर्शनभूत, अतीन्द्रिय, महापदार्थ, ध्रुव, अचल, निरालम्ब और शुद्ध - इन विशेषणों का प्रयोग किया गया है।

शास्त्रों में अधिकांश जगह ऐसे कथन आते हैं, जिनमें हम द्रव्य (आत्मा) और पर्याय के विशेषणों में भेद नहीं कर पाते हैं। यदि पर्याय शुद्ध है तो वह पर्याय ऐसा मानती है कि 'मैं शुद्ध हूँ'। वहाँ पर 'मैं' तो पर्याय है और अहं त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा में होता है। जब भी आत्मा के विशेषण का कथन होता है, तब उन आत्मा के विशेषणों के लिए पर्याय ऐसा कहती है कि 'ये मैं हूँ'। वास्तव में वे विशेषण आत्मा के हैं; क्योंकि पर्याय का स्वर ऐसा होता है कि मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं एक हूँ, मैं निर्मम हूँ, ज्ञानदर्शन से परिपूर्ण हूँ।

जैसा कि समयसार की 73वीं गाथा के पूर्वार्द्ध में भी कहा है -

'अहमेक्को खलु सुद्धो णिम्ममओ णाणदंसणसमग्गो ।'

अर्थात् 'ज्ञानी विचारता है कि मैं निश्चय से एक हूँ, शुद्ध हूँ, निर्मम हूँ और ज्ञानदर्शन से परिपूर्ण हूँ।'

द्रव्य तो अकर्त्ता और अभोक्ता है ही; पर्याय का भी यही स्वर है कि मैं एक हूँ, शुद्ध हूँ, निर्मम हूँ और ज्ञान-दर्शन से पूर्ण हूँ।

ये सभी विशेषण द्रव्य के हैं, पर्याय के नहीं। हमें हमेशा यह विवेक रखना पड़ेगा कि पर्याय का अहं उस द्रव्य में होने से ये विशेषण पर्याय में लगा देते हैं; किन्तु वास्तव में तो ये विशेषण द्रव्य के हैं।

यही समस्या लक्षण और लक्ष्य में भी है। आत्मा का लक्षण तो उपयोग है एवं लक्ष्य है उपयोगात्मा अर्थात् उपयोगस्वरूप आत्मा। शास्त्रों में कभी-कभी लक्ष्य को भी उपयोग कह देते हैं और कभी-कभी लक्षण को भी उपयोग कह देते हैं।

लक्षण से ही वह लक्ष्य लक्षित होता है; अत: जब भी आत्मा के विशेषण कहे जाते हैं; तब हम उन्हें उपयोग नामक पर्याय के विशेषण समझ लेते हैं; जबकि वे विशेषण हैं त्रिकाली ध्रुव आत्मा के।

इसके बाद १९२वीं गाथा की टीका में पथिक और छाया के उदाहरण से यह समझाया गया है कि जिसप्रकार अनेक वृक्षों की छाया थोड़े समय के लिए पथिक के संसर्ग में आती है; उसीप्रकार ये धनादिक अध्रुवपदार्थ भी हमें पुण्य के संयोग से थोड़े समय के लिए ही मिले हैं।

पहले के जमाने में जब लोग पैदल चलते थे, उस समय सड़क के दोनों ओर वृक्ष लगाए जाते थे। उन वृक्षों को लगाने के दो उद्देश्य होते थे। प्रथम उद्देश्य तो सड़क की सुरक्षा का है। सड़क की सुरक्षा का उद्देश्य इसप्रकार है ह्न बरसात में पानी बहने से सड़क कट जाती है। यदि सड़क के किनारे पर दोनों ओर वृक्ष लगा दिए जाए तो वृक्षों की जड़े फैल जाने से वे जड़ें सड़क की मिट्टी रोक लेती हैं; इसलिए सड़क सुरक्षित रहती थी।

दूसरा उद्देश्य पैदल चलनेवालों को छाया प्रदान करने का है; क्योंकि पुराने जमाने में लोग पैदल या बैलगाड़ी, घोड़े आदि पर चलते थे। उनको पूरे रास्ते भर धूप ही धूप न लगे अर्थात् थोड़ी धूप व थोड़ी छाया रहे; ताकि वे अपना रास्ता बिना थके पार कर सके।

आचार्य अमृतचन्द्र के लिए यह उदाहरण अनुभूत प्रयोग था। वे नंगे पैर पैदल चलते थे तथा नंगे पैर चलनेवालों को धूप से गर्म जमीन और वृक्षों की छायावाली ठण्डी जमीन का बहुत अनुभव होता है।

पूर्वोक्त उदाहरण में आचार्य अमृतचन्द्र यह कह रहे हैं कि यदि किसी व्यक्ति को अपने लक्ष्य पर जल्दी से जल्दी पहुँचना है तो वह छाया का लोभ नहीं करेगा। वह धूप में जिस तेजी से चलता था, उसी तेजी से छाया में भी चलेगा।

जिसप्रकार उन वृक्षों की वह छाया पथिक के साथ क्षणिक संयोग में आती है तथा वृक्षों के निकल जाने के बाद पथिक उसका विकल्प भी नहीं करता है। उसीप्रकार यह आत्मा तो अनादि-अनंत अपने रास्ते पर चल रहा है, उसके रास्ते में आनेवाले वे संयोग छाया के समान हैं अर्थात् स्त्री, पुत्र, मकान, जायदाद आदि सभी संयोग छाया के समान हैं।

जिसप्रकार उस पथिक के माथे पर पड़ने वाली छाया अगले समय बदल जाएगी; क्योंकि अगले पल अगले वृक्ष की छाया होगी। उसीप्रकार ये संयोग भी बदलते रहते हैं अर्थात् कोई भी संयोग पुन: प्राप्त नहींहोता।

यहाँ आचार्यदेव इस उदाहरण से यह स्पष्ट कर रहे हैं कि धनादि संयोग से आत्मा को क्या लेना देना ? ये सभी संयोग तो पुण्य के उदय से प्राप्त हुए हैं, जो कि वृक्षों की छाया के समान क्षणभंगुर हैं। **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

वैराग्य समाचार

1. **विदिशा (म.प्र.) निवासी सि. गुलाबचन्दजी बडकुल** का दिनांक 13 मई, 2006 को शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित जवाहरलालजी बड़कुल के लघु भ्राता थे। आपकी स्मृति में विदिशा में पंच दिवसीय शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

2. **मुम्बई निवासी श्री शांतिलालजी जबेरी** का शान्त परिणामों से देहावसान हो गया। आप जीवन पर्यंत वीतरागी तत्त्वज्ञान से जुड़े रहे। गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान को घर-घर में पहुँचाने में आपका विशेष योगदान रहा। श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के लिये आपका सदैव सहयोग रहता था।

3. **छिंदवाड़ा निवासी श्री कुंअरलालजी जैन** का हृदयगति रुकने से देहावसान हो गया है। आप बहुत सरल स्वभावी थे। आपकी स्मृति में आपकी ध.प.श्रीमती सरोजबाई द्वारा जैन पथप्रदर्शक को 101/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

4. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री संजयकुमारजी शास्त्री भोगांव (उ.प्र.) के पिता **श्री मुन्नालालजी जैन** का दिनांक 22 मई को देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 501/-रुपये प्राप्त हुये।

5. **देवलगांवराजा (महा.) निवासी पण्डित नेमचन्द धन्नुसावजी** डोणगांवकर न्यायतीर्थ का 74 वर्ष की आयु में दिनांक 21 मई को समाधिपूर्वक देहावसान हो गया है। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से आप दसलक्षण महापर्व में प्रवचनार्थ तो जाते ही थे साथ ही अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी भी थे। श्री बसंतभाई दोशी के साथ में मिलकर आपने तीर्थों के संरक्षण हेतु अपना विशिष्ट योगदान दिया। आपने गंधहस्ति महाभाष्य आदि ग्रन्थों पर शोधकार्य भी किये हैं। आपका पूरा जीवन जैन साहित्य के संरक्षण, संशोधन एवं शोधखोज में व्यतीत हुआ। आपके चिर वियोग से समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

6. **रत्नौद (म.प्र.) निवासी श्री फूलचन्दजी भैयाजी** का दिनांक 18 मई को शांत परिणामों से देह-विलय हो गया। आपका जीवन सादगीपूर्ण था। आप अध्यात्मप्रेमी, तत्त्वरुचिवाले एवं गुरुदेवश्री से विशेष प्रभावित थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को 201/- रुपये प्राप्त हुये।

7. **सोलापुर (महा.) निवासी** स्व. पण्डित वर्द्धमान शास्त्री विद्यावाचस्पति की धर्मपत्नी **श्रीमती मदनमंजरी देवी** का दिनांक 20 मई, 06 को स्वर्गवास हो गया। आपने अपने जीवन में तीर्थक्षेत्रों के विकासार्थ अनेक कार्य किये।

हार्दिक बधाई

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.), नई दिल्ली द्वारा लेक्चररशिप के लिये आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **राजेन्द्र शास्त्री खड़ैरी** का कनिष्ठ अनुसंधान छात्रवृत्ति (जे आर एफ) हेतु चयन हो गया है। साथ ही **संजीव शास्त्री खड़ैरी** एवं **नितिन शास्त्री विदिशा** ने भी अपनी विशिष्ट योग्यता का परिचय देते हुये इस गौरव को प्राप्त किया है।

राजेन्द्र शास्त्री

संजीव शास्त्री

नितिन शास्त्री

जैन पथप्रदर्शक एवं महाविद्यालय परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

रजत जयन्ती महोत्सव मनाया

बिजौलियाँ (राज.) : यहाँ दिनांक 28 मई से 1 जून, 2006 तक पण्डित कैलाशचन्दजी मंगलायतन की पावन प्रेरणा से निर्मित श्री सीमंधर जिनालय का रजत जयन्ती महोत्सव विविध गतिविधियों सहित सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

महोत्सव में प्रवचनार्थ डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित प्रहलादरायजी मन्दसौर, पण्डित संजयजी हरसौरा भैसरोडगढ, पण्डित राकेशजी शास्त्री मंगलायतन एवं पण्डित रमेशजी जैन लाम्बाखोह पधारे।

पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा प्रथमानुयोग पर आधारित जैन कथाओं की संगीतमय प्रस्तुति की गई।

महोत्सव में बाल कक्षाओं का विशेष आयोजन हुआ। कार्यक्रमों में लगभग 900-1000 मुमुक्षुओं ने लाभ लिया।

झण्डारोहण श्री ज्ञानचन्दजी हरसौरा ने किया। मंच का उद्घाटन श्री नेमीचन्दजी बघेरवाल भीलवाड़ा ने एवं द्वार का उद्घाटन श्री जिनेन्द्रकुमारजी अजमेरा बेगूवालों के द्वारा किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलियाँ मंगलायतन के निर्देशन में सम्पन्न हुये। **ह्न रमेश धनोप्या**

वेदी शिलान्यास सम्पन्न

द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम सिद्धायतन में दिनांक 1 जून, 06 को गुरुदत्त भगवान की वेदी एवं आत्मन् निकेतन (त्यागी भवन) का शिलान्यास हसुमतिबेन जगदीशभाई लोदरिया परिवार मुम्बई के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

शिलान्यास के पूर्व दिनांक 31 मई को पंच परमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। इस दो दिवसीय मांगलिक कार्यक्रम में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित कोमलचन्दजी टडा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अरुणजी मोदी सागर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अरुणजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ आदि विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

ह्न प्रेमचन्द मस्ताई

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जून (द्वितीय) 2006
RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व धर्मदर्शन तथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127